एस.एस. कॉलेज जहानाबाद।
विभाग - हिन्दी
विषय - 'चन्द्रगुप्त' नाटक
वर्ग - स्नातक प्रतिष्ठा, भाग-1
शिक्षण माध्यम - वाट्स-एप
समय - 11 बजे से 12 बजे तक, 23.9.20.
शिक्षक - डॉ. रमेश शर्मा
पाठ - 'चन्द्रगुप्त' नाटक की व्याख्येय पंक्तियाँ

प्रिय छात्र - छात्राएँ!

आज व्याख्या के लिए निम्नलिखित हैं —

" भूमा का सुख और उसकी महत्ता का जिसको आभास-मात्र हो जाता है, उसको ये नश्वर चमकीले पदार्थ प्रदर्शन नहीं अभिभूत कर सकते दूत! वह किसी बलवान की इच्छा का क्रीड़ा-कन्दुक नहीं बन सकता, तुम्हारा राजा अभी झेलम भी नहीं पार कर सका, फिर भी जगद्विजेता की उपाधि लेकर जगत को वंचित करता है। मैं लोभ से, सम्मान से या भय से किसी के पास नहीं जा सकता।"

प्रस्तुत पंक्तियाँ नाटककार जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'चन्द्रगुप्त' नाटक के प्रथम अंक के दशम दृश्य से ली गई हैं। नाटक में ये पंक्तियाँ भारतीय ऋषि दाण्ड्यायन के मुख से उच्चरित हैं। सिन्धु तट पर दाण्ड्यायन का आश्रम है। वहीं एनिसाक्रीटिज आता है और दाण्ड्यायन से कुछ कहना चाहता (सिकन्दर का सहचर) है। दाण्ड्यायन कई बार उसकी बात अनसुना कर देते हैं। इसपर एनिसाक्रीटिज सिकन्दर का गुणगान गाता हुआ उसे जगत् विजेता और देवदूत ~~बता~~ बतलाता हुआ कहता है - "आपसे कुछ उपदेश ग्रहण करना चाहता है। इसी पर ऋषि दाण्ड्यायन की यह उक्ति है।

'भूमा का सुख' से तात्पर्य विराट पुरुष या ईश्वरीय सत्ता के सुख से है। ऋषि का कहना है कि ईश्वरीय सत्ता का जिसे आभास मात्र हो जाता है, उसकी महत्ता को जो थोड़ा भी जान जाता है उसे नश्वर चमकीले प्रलोभन जिसे तुम देवदूत कहकर मुझे आकर्षित करना चाहते हो आकृष्ट नहीं करते। तुम्हारा राजा झेलम नदी तो पार नहीं कर सका है किन्तु जगत् विजेता की ~~कैसे तुम~~ उपाधि स्वयं ग्रहण कर संसार को ठग रहा है। मैं लोभ, सम्मान या भय से किसी के पास नहीं जाता।

उपर्युक्त कथन में ऋषि दाण्ड्यायन द्वारा सिकन्दर जो जगत् विजेता के उद्देश्य से भारत आना चाहता है या आक्रमण करना चाहता है उसे जबरदस्त ठोकर ऋषि द्वारा मारी गई है या कहें तो झूठे आत्म प्रदर्शन का खोखलापन निर्भीकता से प्रस्तुत कर उसके सहचर एनिसाक्रीटिज को एक संकेत दिया गया है कि भारत में उसकी दाल नहीं गलनेवाली है। आत्मविश्वास से लबरेज सिकन्दर और उसके सहचर के लिए नाटककार ने जैसे चेतावनी दाण्ड्यायन के आश्रम से प्रदान की है। मनोबल तोड़ने के लिए यह मानसिक आघात है।

23.9.20.